



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-07
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा नियम, 1976

(यथासंशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

9. हिन्दी में प्रवीणता- यदि किसी कर्मचारी ने-

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

(1) (क) यदि किसी कर्मचारी ने-

(i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

(ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(iii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(2) यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(3) केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

(4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

(1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास — 3

जीवन दीप —

— श्वेता दूबे 4

प्यार का मोल—

— ब्यास किशोर 7

सुकन्या समृद्धि....—

— वीरन्द्र यादव 13

एक पत्र

— नव ज्योति अंकुश 15

आधार कार्ड —

— इंद्र ज्योति राय 17

सच्चिदानंद की दो कविताएं

सच्चिदानंद जिज्ञासु 18

छाया चित्र

19

चित्र विथिका

20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – rajbhasha.malda@gmail.com

दशहरा

दशहरा भारत का 'राष्ट्रीय त्योहार' है। दशहरा या दसेरा शब्द 'दश' (दस) एवं 'अहन्' से ही बना है। दस इन्द्रियों पर विजय का पर्व है। असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। बहिर्मुखता पर अंतर्मुखता की विजय का पर्व है। अन्याय पर न्याय की विजय का पर्व है। दुराचार पर सदाचार की विजय का पर्व है। तमोगुण पर दैवीगुण की विजय का पर्व है। दुष्कर्मों पर सत्कर्मों की विजय का पर्व है। भोग पर योग की विजय का पर्व है। असुरत्व पर देवत्व की विजय का पर्व है। जीवत्व पर शिवत्व की विजय का पर्व है। इसमें अपराजिता देवी की पूजा होती है। दशहरा या विजया दशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। इस दिन राम ने रावण का वध किया था। रावण राम की पत्नी सीता का अपहरण कर लंका ले गया था। भगवान राम युद्ध की देवी माँ दुर्गा के भक्त थे, उन्होंने युद्ध के दौरान पहले नौ दिनों तक माँ दुर्गा की पूजा की और दसवें दिन दुष्ट रावण का वध किया। इसके बाद राम ने भाई लक्ष्मण, भक्त हनुमान, और बंदरों की सेना के साथ एक बड़ा युद्ध लड़कर सीता को छुड़ाया। इसलिए विजयादशमी एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन रावण, उसके भाई कुम्भकर्ण और पुत्र मेघनाद के पुतले खुली जगह में जलाए जाते हैं। कलाकार राम, सीता और लक्ष्मण के रूप धारण करते हैं और आग के तीर से इन पुतलों को मारते हैं जो पटाखों से भरे होते हैं। पुतले में आग लगते ही वह धू धू कर जलने लगता है और इनमें लगे पटाखे फटने लगते हैं और जिससे इनका अंत हो जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस उत्सव का सम्बंध नवरात्र से भी है क्योंकि इसमें महिषासुर के विरोध में देवी के साहसपूर्ण कृत्यों का भी उल्लेख होता है।

दशहरा उत्सव में रामलीला भी महत्वपूर्ण है। यह देश में अलग अलग तरीके से मनाया जाता है। रामलीला में राम, सीता और लक्ष्मण की जीवन का वृत्तांत का वर्णन किया जाता है। रामलीला नाटक का मंचन देश के विभिन्न क्षेत्रों में होता है। यह बंगाल और मध्य भारत के अलावा दशहरा पर्व देश के अन्य राज्यों में क्षेत्रीय विषमता के बावजूद एक समान उत्साह और शौक से मनाया जाता है। उत्तरी भारत में रामलीला के उत्सव दस दिनों तक चलते रहते हैं और आश्विन माह की दशमी को समाप्त होते हैं, जिस दिन रावण एवं उसके साथियों की आकृति जलायी जाती है। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर और भी कई प्रकार के आयोजन होते हैं। सर्वप्रथम श्री रामचंद्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

मोहित सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

सुधांशु कुमार विश्वास
राजभाषा अधिकारी (प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

कैलाश चंद्र धारिया
व. अनुवादक

सहयोग

इंद्र ज्योति राय एवं
दयामय दास

जीवन दीप

दीपावली का दिन था। गांव के सभी घरों में दीप जलाने की तैयारी चल रही थी। बच्चे खुशी से झूम रहे थे, गृहणियां अपने-अपने घरों की शेष बची रंगाई-पुताई का काम जल्दी-जल्दी पूरा कर रही थीं। कृषक भी अपने खेतों से अपना काम निपटा कर समय से पहले आ जाना चाहते थे।

पर रमिया के घर न कोई उत्साह था, न ही दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश के पूजन की ही कोई तैयारी चल रही थी। पूरा घर दुख की इस अनपेक्षित आहट से अकुला रहा था।

रमिया घर की बड़ी बहू थी। उसकी शादी के पांच साल बाद उसकी गोद में एक फूल ने जन्म लिया था। मां के लिए वह नन्हा फूल तो कीमती था हा, दूध घर के अन्य सदस्यों की आशा का भी वह केन्द्र था। उस शिशु ने इस साल की दीपावली तक ग्यारह महीने पूरे कर लिए थे।

शिशु भी अपनी बाल सुलभ चपलता से परिवार तो परिवार, पूरे गांव वालों को अपनी ओर खींचता था। गांव की कई स्त्रियां तो इसलिए वहां आती थीं ताकि चंद पल उसे खेला सकें।

दीपावली के एक दिन पूर्व से ही उस शिशु की चपलता घटने लगी थी। दीपावली की सुबह तक वह बुखार से पूरी तरह तपने लगा था। मां की चिंता तो थी ही, लेकिन जब बुखार ने अपना विकराल रूप धारण किया तो पूरे परिवार की शांति पल में नष्ट हो गई।

घर में शिशु का पिता ही एक मात्र नौकरी करने वाला था, इसलिए परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। वह भी इतनी दूर नौकरी करता था, जहां से तुरंत कोई संप साधना सहज नहीं था।

जैसे-जैसे शिशु की हालत नाजुक होती गई, वैसे-वैसे रमिया के दिल पर कई हथौड़ों की चोटें लगती महसूस होने लगी थीं। वह किसी पागल की भांति कभी शिशु को देखती, तो कभी उसे गोद में उठाती, तो कभी दूसरे क्या राय देते हैं, उस पर गौर करती।

एक-आध गंवई डाक्टर उस शिशु को आकर देख गए, पर उनकी दवा का उस शिशु के बुखार पर कोई असर नहीं हुआ।

गांव में कोई अस्पताल तो था नहीं जहां शिशु को भर्ती किया जा सके। अंत में, जब गंवई डाक्टर उसके रोग को नहीं पकड़ सके तो उसे पंचायत के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाने के लिए सुझाव दिया।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र वहां से मात्र तीन किलोमीटर ही दूर था। रमिया, जो पूरे गांव में अपनी खूबसूरती और उदारता के लिए जानी जाती थी, बिना किसी बनाव-क्षुंगार के ही अपने दुधमुंहे बच्चे को गोद में उठाए चलने को तैयार थी।

रमिया ने पूरे घर में तलाशा तो मात्र बहत्तर रुपये ही निकल सके। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में तो खैर कोई पैसा नहीं लगता है। लेकिन वहां भी यदि उसकी तबियत नहीं सुधरी तो क्या होगा? घबराहट के मारे उसका शरीर कांप रहा था।

तभी उसकी सास ने पूछा-“बहू, यदि शहर भी जाना पड़े तो तुम चली जाना। तुम्हारे साथ हरि तो रहेगा।”

हरि रमिया का देवर था जो हाई स्कूल में पढ़ता था। उसने अपनी भाभी से पूछा-“भाभी, यदि शहर जाना पड़ा तो रुपये भी तो चाहिए?”

“हां, पूरे घर में तलाशने के बाद मेरे पास कुल बहत्तर रुपये ही निकले हैं! क्या इससे काम चल जाएगा?”

“इतने रुपयों में तो मात्र शहर आने-जाने का बस का किराया ही हो जाएगा। यदि डाक्टर ने कोई दवा

आदि खरीदने को कहा तो क्या होगा?”

रमिया को आज अपने लापरवाह पति पर काफी गुस्सा आ रहा था कि दीपावली जान कर भी समय से वह पैसे नहीं भेज सका। यदि दीपावली के लिए भी पैसे भेजे होते तो आज बच्चे की दवा-दारू के लिए कोई समस्या नहीं होती।

वह कातर होकर अपनी सास से बोली-“मांजी, यदि शहर जाना पड़ा तो पैसे दवा के लिए भी नहीं बचेंगे। आप गांव में किसी से मांग लीजिए ना।”

रमिया की सास गांव में कड़्यों के घर गई, पर उसे निराशा ही हाथ लगी। गांव में ऐसी बात नहीं थी कि लोगों के पास दो-तीन सौ रुपये नहीं थे और वे रमिया की सास को दवा के लिए नहीं दे देते। पर आज तो दीपावली का त्योहार था। लोग अपने-अपने घरों में लक्ष्मी-गणेश का पूजन कर लक्ष्मीजी को अपने घर में स्थिर करना चाहते थे।

वैसे भी लोगों को यह डर था कि यदि आज के दिन किसी को उधार रुपये-पैसे दिए जाएंगे तो लक्ष्मीजी उसके घर से चली जाएंगी।

रमिया का पट्टीदार भोला काफी रुपये-पैसे वाला था पर उसने रमिया की सास को यह कह कर लौटा दिया कि क्या कहें घर में थोड़े बहुत रुपये पैसे हैं भी तो उसे आज के दिन दे पाना संभव नहीं है। अभी अपनी तीन मंजिला इमारत को दीपों से सजाने तथा धूम-धड़ाके में ही कई हजार के खर्चे हैं। आज के दिन तो बाकी-उधार कोई रखेगा नहीं। इसलिए कोई दूसरी व्यवस्था ही कर लो।

रमिया के सास के पैर पत्थर के हो गए। वह पूरे गांव में घूम आई थी, पर किसी ने उसे थोड़े से रुपये भी नहीं दिए जो उसके पोते के ईलाज में लग सकें। वह भोला के यहां जाना तो नहीं चाहती थी पर अपनी सारी हया लाज और मान को तज कर उसके घर गई थी।

मनुष्य अपनों के सामने छोटा नहीं बनना चाहता है। रमिया की सास न चाहते हुए भी अपने पट्टीदार भोला के यहां गई थी पर उसके इंकार ने उसे जड़ बना दिया था।

वह भोला के यहां से जब अपने घर पहुंची तो शिशु की हालत बेसुध थी। रोती हुई उसने रमिया से कहा-“बहू, पैसों का जुगाड़ कहीं भी नहीं हो सका, अब तो ईश्वर ही मालिक है। तुम और विलंब मत करो, ये जो भी रुपये हैं, लेकर प्राथमिक केंद्र पहुंचो। ईश्वर चाहेगा तो तुम लोगों को शहर नहीं जाना पड़ेगा।”

अव्यक्त भय, निराशा और दुख में मनुष्य का होश ठिकाने नहीं रहता। रमिया अपने बच्चे को लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की ओर बढ़ चली। जिस रमिया ने गांव में कभी पैर नहीं रखा था, वही आज धान के कटे खेतों के तमाम ऊबड़-खाबड़ गड्ढों को पार करते हुए अपने देवर के साथ किसी तीर की तरह बढ़ी चली जा रही थी*

स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचते-पहुंचते उसके पैर लहलुहान हो चुके थे। पर बिना उनकी चिंता किए उसने वहां पहुंच कर ही दम लिया। पर दीपावली का दिन होने से वहां भी छुट्टी थी और उसके आसपास कोई डॉक्टर भी नहीं था।

शिशु अब तक बेजान हो आया था। लेकिन मां का दिल यह मानने को तैयार नहीं था कि ईश्वर उसके शिशु को ठीक नहीं करेगा। वह वहां से फिर चार किलोमीटर पैदल चल कर शहर जाने वाली बस पकड़ने के लिए चल पड़ी।

रास्ते में वह किसी पागल की भांति चल रही थी। तभी उसे ठोकर लग गई। लेकिन साथ चल रहे उसके देवर ने उसे संभाल लिया। बस स्टैंड पर पहुंचते हुए संयोग से तुरंत ही उन्हें बस मिल गई। बस वाला ड्राइवर बड़ा नेक था। वह बच्चे की बीमारी जान कर बड़ी तेजी से बस शहर ले गया।

किराया देने के बाद रमिया के पास मात्र पचास रुपये बचे थे जिसमें फिर घर भी लौटना था। वे दोनों एक

अस्पताल के पास पहुंचे। वह किसी महिला डाक्टर का निजी अस्पताल था।

डॉक्टरनी ने बच्चे को देखा और बताया- “शिशु को निमोनिया हो गया है और एक घंटे के भीतर इसे दवा नहीं दी गई तो फिर इसे बचाना मुश्किल होगा। दवा और भर्ती करने का खर्च हजार रुपये पहले जमा करो तो हम इसके ईलाज की व्यवस्था करें।”

रमिया ने रो-रो कर अपनी स्थिति बताई पर उसकी गिड़गिड़ाहट का डॉक्टरनी पर कोई असर नहीं पड़ा। जब डॉक्टरनी ने देखा कि यह ऐसे नहीं हटने वाली है तो उसने अपने गार्ड को बुला कर धक्के देकर बाहर करवा दिया।

बच्चे से निराश रमिया एक दूसरे डॉक्टर के पास पहुंची। वह भी पहले ईलाज करने से इंकार करता रहा। पर फिर उसे दवा आ गई और वह उसके लिए बाजार से खरीद कर दवा लाने के लिए पर्ची लिख दी।

रमिया का देवर मुरझाया चेहरा लिए भतीजे की दवा लाने चल पड़ा। केमिस्ट ने दवा की कीमत चार सौ रुपये बताई। उसके पास तो मात्र पचास रुपये ही थे वह चार सौ रुपये कैसे देता। पचास रुपये जानकर उसने भी दवा देने से इंकार कर दिया।

वह लड़का गिड़गिड़ाते हुए दुकानदार से अपनी परेशानी बताते हुए लगभग रुंआसा हो गया। पर दुकानदार उसे वहां से भगाने के लिए जैसे उठा कि दूर खड़ा एक आदमी पास आया और अपने पास के चार सौ रुपये देते हुए दुकानदार को दवा देने के लिए कहा। दुकानदार ने मुंह बिचकाते हुए दवा दे दी।

उसने घर से दीपावली के अवसर पर बच्चों एवं पत्नी के कपड़े तथा जरूरी सामान खरीदने के लिए साल भर में चार सौ रुपये बचाए थे। वही लेकर बाजार करने आया था। उसने जब लड़के की सारी बातें सुन ली तो सोचा कि यदि मेरे घर दीप न भी जलें तो क्या होगा, अगले साल जला लेंगे। लेकिन एक मां के एकलौते बेटे का जीवनदीप बुझ जाएगा तो ऐसी दीपावली का क्या करना!

वह आदमी लड़के के साथ शिशु के पास तक आया। वह वहां थोड़ी देर रुका रहा। दवा ने असर दिखाना शुरू किया और शिशु की सांसें संभलने लगीं।

शिशु शाम होते होते लगभग ठीक हो गया। डाक्टर ने दवाइयां देते रहने का निर्देश देकर उन लोगों को अपने घर जाने का निर्देश दे दिया। जिस भलेमानस ने रुपये दिए थे, वह भी उस शिशु को बस तक छोड़ने आया। उन लोगों को उसने उनके गांव जाने वाली बस पर चढ़ा दिया। रमिया का दिल खुशी से विभोर तथा उस व्यक्ति की सज्जनता के आगे नतमस्तक था।

उस भलेमानस को भी कम खुशी नहीं थी कि भले ही आज उसके घर में कोई दीप जले न जले, पर उसने एक मां का दिया बुझने से बचा लिया है।

— श्वेता दूबे

Y Y Y Y Y Y Y Y

प्यार का मोल

भोजन के बाद दोनों बच्चों के साथ बिस्तर पर जा लेटा, पर आज मेरी आंखों से नींद कोसों दूर थी। बार-बार प्रयास करने पर भी असफल रहा और करवटें बदल-बदल कर रात बिताई। सुबह होने तक मैं एक अटूट निर्णय पर पहुंच चुका था।

मेरे पैर कालेज के सेक्रेटरी महोदय के बंगले की ओर बढ़ रहे थे। वह देखते ही तपाक से बोले-“आइए बड़े बाबू, आइए, कालेज का क्या समाचार है? नई प्राचार्या कैसी हैं?”

मेरे उत्तर देने के पहले ही उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज लगा कर चाय लाने को कहा। चाय आई तो हम दोनों साथ बैठ कर पीने लगे। परंतु यह चाय मेरे लिए नीरस और बेस्वाद थी क्योंकि मेरे मन में गुत्थी समाई हुई थी। उसी दौरान उन्होंने फिर पूछा- “कहिए, कैसे आना हुआ?”

मैंने अपनी शांति बनाए रखी। वह फिर बोले-“क्यों चुप हैं, कोई खास बात है क्या? चेहरे पर भी उदासी छाई हुई है।”

मैंने जेब से एक कागज निकाल कर सेक्रेटरी महोदय के सामने बढ़ा दिया।

“अरे यह क्या है?”

“त्याग पत्र।”

आश्चर्य के साथ मेरी तरफ देखते हुए सेक्रेटरी महोदय ने पूछा-“क्या बात है?”

मेरे पास उनके सवाल का कोई जवाब नहीं था। बार-बार पूछने के बाद भी उचित उत्तर न देकर कहा-“आप के सामने मेरा त्याग पत्र है, कृपया इसे कालेज के मैनेजर तक पहुंचा दें।”

“लेकिन आपके दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनका भविष्य अंधकार- मय हो सकता है।” सेक्रेटरी महोदय ने समझाते हुए कहा।

“मैं यह त्याग पत्र स्वेच्छा से दे रहा हूं। मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे हैं। तो क्या हुआ? आप लोगों की पहुंच ऊपर तक है। किसी दूसरे स्थान पर मेरी नौकरी लगा देंगे। मैं वहीं करता रहूंगा। परंतु अब कालेज में एक पल रहना मेरे लिए घुट-घुट कर जीने के समान है।” इतना कह कर मैं पुनः कालेज के तरफ बढ़ गया। दफ्तर में कुर्सी किनारे कर बैठ चिंता मग्न हो गया। जब तंद्रा भंग हुई तो सामने सेक्रेटरी महोदय खड़े थे।

मैंने उन्हें बैठने के लिए कुर्सी दी। वह बैठ गए और बोले- “आपने कुछ बताया नहीं और चुपचाप चले आइए* अतः मुझे आप के पास दफ्तर में आना पड़ा।”

तभी कालेज की परिचारिका मोहनी देवी ने कहा-“बड़े बाबू, आपको प्रधानाचार्या बुला रही हैं।”

प्रधानाचार्या का नाम सुनते ही मेरी भोंहें टेढ़ी हो गई। कहा-“बोल दो, मैंने कालेज से त्याग पत्र दे दिया है।”

मेरी दृढ़ता देख सेक्रेटरी समझ गए कि बड़े बाबू के साथ निश्चय ही कोई खास बात हुई है। तभी इनका मूड ठीक नहीं हैं। वह चुपचाप उठ कर प्रधानाचार्या के कार्यालय में जा पहुंचे और बोले-“मैं इस कालेज का सेक्रेटरी हूं। आप नई आई हैं, सोचा आपसे मिलता चलूं।”

“मैं स्वयं मैनेजर के पास जाने वाली थी।” नई प्रधानाचार्या बोलीं।

“अपना कुछ परिचय बताइए।” सेक्रेटरी ने पूछा।

“मैं बनारस की रहने वाली हूँ, वहीं एक कालेज में लेक्चरर थी। आयोग द्वारा आप के यहां प्राचार्या बना कर भेज दिया गया। मेरा नाम गीता है।” प्राचार्या बोली।

बातों के दौरान सेक्रेटरी ने प्राचार्या को ध्यान से देखा। तीस-बत्तीस के लगभग एक गोरी और सुंदर महिला थीं। परंतु माथे पर बिंदी, सिंदूर नहीं होने से सुंदरता कुछ अधूरी दिख रही थी। यह देख वह सोच में पड़ गए। लेकिन किसी की व्यक्तिगत जिंदगी के विषय में जानने का उन्हें कोई हक नहीं था।

“अच्छा, मैं चलता हूँ। फिर कभी बातें होंगी।” कह कर वे निकलने लगे। तभी उनके कानों में यह आवाज आई- “कृपया, यह इस्तीफा मैनेजर तक पहुंचा देंगे?” अपने बैग से एक कागज देते हुए प्राचार्या बोलीं।

“इस्तीफा?” शब्द सुन कर सेक्रेटरी को अपने कानों पर सहसा विश्वास नहीं हुआ।

“जी हां, मेरा इस्तीफा।” गंभीर स्वर में वे बोली।

“वाह, क्या आश्चर्य है। उधर कालेज के बड़े बाबू और इधर कालेज की प्रिंसिपल। दोनों एक ही दिन इस्तीफा दे रहे हैं ! आखिर बात क्या है? दो ही दिनों में आप लोगों ने इतना बड़ा निर्णय ले लिया ! सुबह-सुबह आप दोनों ने कौन सा बैर निकाला है मुझसे।”

“बड़े बाबू ने भी इस्तीफा दे दिया, लेकिन क्यों?” प्रिंसिपल गीता के मुंह से आश्चर्य झलक रहा था।

“हां, वह आपसे पहले ही त्याग पत्र मेरे घर जाकर दे आए थे। मैं उन्हें ही समझाने आया था। यहां आया तो आपने भी अपना इस्तीफा दे दिया।” सेक्रेटरी ने कहा।

सेक्रेटरी के जाने के बाद गीता अपनी कुर्सी पर बैठ गई और न जाने किस सोच में पड़ गई। चार बजे एक च परासी आकर प्रिंसिपल और क्लर्क को सूचना दे गया कि आज रात्रि आठ बजे मैनेजर साहब ने कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक रखी है।

कन्या इंटर कालेज शहर का काफी पुराना तथा प्रतिष्ठित कालेज था। अनुशासन और पढ़ाई में भी मान्यता प्राप्त है। दो तल मिला कर चालीस कमरों के इस कालेज में प्रिंसिपल और क्लर्क के रहने के कमरे भी संलग्न थे। नीचे के तल्ले में एक स्वीपर और एक परिचारिका मोहनी देवी स्थाई रूप से रहा करती थीं।

कमेटी के लोग मैनेजर के घर उपस्थित हो चुके थे। सभी के मन में एक जिज्ञासा थी और भविष्य की चिंताएं भी। औपचारिक तरीके से कार्यवाही प्रारंभ होने वाली ही थी कि मैनेजर की धर्मपत्नी कलावती देवी, जिन्हें लोग ‘मौसीजी’ कहा करते थे, वह मेरे और नई प्रिंसिपल में अनबन की बात सुनकर अनौपचारिक रूप से कुर्सी खींचकर बैठते हुए बोलीं- “बेटा, ब्यास क्या बात है? क्यों इस्तीफा दे रहे हो? बताओ क्या बात है? सच बताओ। हम तो तुम्हें हमेशा.....।

“खैर, इधर आओ। मेरे पास बैठो। अरे, बेटी गीता, तुम भी बैठो, क्या बात है, मुझे बताओ? मीटिंग-फीटिंग की बात छोड़ो। मुझे बताओ।” मौसी अपनी बात बेधड़क बोल रही थीं। उनके आगे सभी सदस्य चुपचाप बैठे रहे।

“मौसीजी, मेरे दो छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनकी देखभाल के कारण कालेज के कार्यों में कठिनाई हो रही है। अतः मैं स्वेच्छा से त्याग पत्र दे रहा हूँ।” मैंने तपाक से मौसी को उतर दिया।

“लेकिन दो दिन पहले तक तो आप ही जिम्मेदारी संभाल रहे थे। यह अचानक क्या हो गया?” एक सदस्य ने मुझसे पूछा।

“ब्यास ! नाटक छोड़ो, सच बताओ।” मौसी ने डपट कर पूछा।

“हां, हां ! सच बताओ।” सभी सदस्य एक स्वर में बोले।

मैंने देखा, अब बचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था। अतः एक बार तिरछी नजर से प्रिंसिपल गीता की ओर देखा। वह चुप थांन्, सिर नीचे झुका कर कुछ सोच रही थांन्।

मैंने कहना प्रारम्भ किया- “मैं वाराणसी में जब पढ़ रहा था, वहीं मेरी मुलाकात गीता नाम की एक लड़की से हुई जो शीघ्र ही दोस्ती में बदल गई।” यह वाक्य बोल कर बड़े बाबू बीच में रुक गए।

गीता नाम सुन कर मौसी तथा साथ में बैठे सारे सदस्यों को संदेह हुआ, लेकिन कुछ स्पष्ट नहीं होने के कारण किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने फिर कहना प्रारंभ किया-“हमारी वह दोस्ती कब प्यार का रूप ले बैठी, हमें ज्ञात ही न रहा। हमने साथ-साथ मरने जीने की कसमें भी खाईं।

तभी गीता के घर वालों ने मुझे पंसद कर लिया। उसके पिता रेलवे में एक अधिकारी थे। दो छोटे भाइयों में वह सबसे बड़ी थी।

“एक दिन मुझे उसके घर बुलाया गया।

अच्छी तरह परखने के बाद विवाह हेतु उसके माता-पिता द्वारा मैं चुन लिया गया। रात मुझे गीता के घर पर ही गुजारनी पड़ी। गीता भी आसपास मंडराती रही। वह बहुत प्रसन्न थी। उसके मन के अनुसार प्रेम विवाह होने वाला था। उसने अपने मन से मुझे पति स्वीकर कर लिया था।

“प्रातः जब नींद खुली तो कमरे में शिव-शिव का शब्द सुनाई पड़ा जो लगातार सुनाई दे रहा था। मैंने पूछा कि ये किसके शब्द हैं? इतनी ठण्ड में सवेरे शिव-शिव कौन कह रहा है?

“गीता चाय देते हुए बोली-“ये मेरी मां हैं जो नित्य गंगा में स्नान करती हैं तथा भगवान का ध्यान करती हैं।

“चाय पीने के बाद मैं मांजी के पास गया और पांव छू कर पूछा-“आखिर क्या मिलता है, इस गंदे और अपवित्र जल में स्नान करके? जानती नहीं, आजकल गंगा जल इतना अपवित्र हो गया है कि पीना तो दूर, स्नान तक करने से बीमारियां हो जाने का खतरा है।

“मेरे इस तीखे प्रहार से गीता की मां तिलमिला उठीं और बोली कि बस ब्यास! तुम तो ऐसे बात कर रहो हो जैसे गंगा नदी नहीं, कोई गंदी नाली है।

“मांजी आप नाराज न हों। लेकिन सारे शहर के गंदे नाले इसी नदी में आकर गिरते हैं साथ ही न जाने कितनी लाशें यहां फूंकी जाती हैं और जली-अधजली राख और कचड़े के साथ इसी नदी में प्रवाहित कर दिए जाते हैं।



“तुम तो बिल्कुल नास्तिकों जैसी बातें करते हो। तब तो तुम भगवान और उसके अस्तित्व को भी नहीं मानते होगे?”

“हां, मांजी।”

“देखो ब्यास, हमारी लड़की तुम्हें पसंद करती है इसलिए तुम्हें अपना दामाद बनाने को हम तैयार हैं, अन्यथा तुम जैसो का हमारे घर में कोई स्थान नहीं हैं।

“हम लोगों के वार्तालाप को सुन कर गीता के पिता वहां आए और थोड़ा क्रोधित होते हुए बोले कि तुम जानते नहीं, हम दोनों के मन- मंदिर में हमेशा काशी के बाबा विश्वनाथ बसे रहते हैं।

“मैंने त देते हुए कहा कि आप मान लें या देख लें इस कमरे में कोई मेज नहीं है-परंतु आप के ध्यान में है तो क्या हमारे ध्यान में मेज का होना वास्तविक रूप में कमरे में मेज का होना दर्शाएगा? नहीं न! अगर प्रत्यक्ष रूप में मेज होगी तो तभी मानेंगे कि मेज है। इसी प्रकार परमात्मा को प्रत्यक्ष रूप में न देख कर ध्यान में देखा जाए तो यह कल्पना के अलावा और कुछ नहीं है।

“इतना सुनते ही वे दोनों मेरे निकट आकर खड़े हो गए और बोले कि निकल जाओ, चले जाओ, यह शादी कदापि नहीं होगी। और न जाने क्या-क्या उन लोगों ने कहा, मगर मैं मुस्कराता रहा।

“गीता अपने माता-पिता से बार-बार चुप हो जाने को कह रही थी। पर उसके माता पिता पढ़े-लिख होने के बावजूद उतने समझदार नहीं थे, जितना वे उच्च कुल से ताल्लुक रखते थे।

“मांजी, आप को नाराज करने का मेरा कोई इरादा नहीं था लेकिन जो सत्य मुझे पता है, वही मैंने कहा है। लेकिन आप इस बात का इतना गुस्सा करेंगी, मैं नहीं जानता था। खैर हो सके तो माफ करे दें।”

“नहीं, यह रिश्ता समाप्त। आज के बाद तुम्हारा इस घर में आना बंद। जितनी पास मेरी खुशियां दिखाई दे रहीं थांद्न, अचानक वे किसी रेत के समुंद्र में खो गईं।

“मैंने एक नजर गीता की ओर देखा। वह रो रही थी। जब उसने मेरी तरफ देखा तो मैंने महसूस किया कि उसके होंठ कुछ कहने को आतुर हैं,लेकिन मां-बाप द्वारा पाबंदी होने के कारण वह चुप थी।

“मैं माहौल को और गमगीन नहीं करना चाहता था। मैंने एक पल भी वहां रुकना उचित नहीं समझा और दरवाजे से बाहर निकल आया।

“मैंने आगे की पढ़ाई छोड़ दी और गांव आ गया। माता-पिता ने बहुत पूछा पर मैंने चुप रहना ही उचित समझा। कुछ दिनों में मेरा विवाह कर दिया गया। थोड़े ही दिनों के बाद मेरी क्ल की नौकरी आपके कालेज में हो गई।

“मेरे भाग्य ने मेरे साथ बहुत भद्दा मजाक किया और एक दिन मुझे मालूम हुआ कि मेरी धर्मपत्नी मेरे साथ-साथ मेरे दोनों बच्चों को छोड़ कर हमेशा के लिए चली गई है। तब से मैं इन्हीं बच्चों के साथ जी रहा हूं।”

“उस लड़की का क्या हुआ?” मैनेजर ने पूछा।

“उसका क्या हुआ, मैंने यह जानने की कभी कोशिश नहीं की।”

“शादी होने के बाद भी मैं गीता से एक तरफा प्यार करता रहा,मगर वह कहां है, हलौंसी है मुझे कुछ नहीं मालूम।” मैंने जबाब दिया। फिर कुछ सोच कर बोला-“अचानक एक दिन मालूम हुआ कि कालेज में आयोग से कोई नई प्रिंसिपल आने वाली हैं” जिनका नाम भी गीता है। इस नाम से मुझे कुछ आशंका हुई।

“गेट पर अन्य अध्यापिकाओं ने उन्हें माल्यार्पण किया। मेरे हाथ में भी एक माला थी। मेरा हाथ गले की तरफ

बढ़ने ही वाला था लेकिन मैंने जो देखा, मुझे विश्वास नहीं हुआ।

“मेरी आंशका ने हकीकत का रूप ले लिया जब मैंने नई प्रिंसिपल गीता को देखा। मेरा ऐसा होना स्वाभाविक था क्योंकि यह वही गीता थी जिससे मैंने प्यार किया था और आज तक एक तरफा प्यार करता रहा।

“मेरे हाथ वहीं रुक गए। मैं ऊपर से नीचे तक देख रहा था। बरबस मेरा हाथ न जाने क्या सोच कर उसके गले तक चला गया।

“अपने इस व्यवहार से मुझे खुद ही शर्मिंदगी महसूस हो रही थी और साथ ही साथ मुझे यह चिंता भी खाए जा रही थी कि क्या हम दोनों का फिर से एक ही कालेज में रहना ठीक होगा? शायद नहीं। इसलिए मैंने अपना त्याग पत्र आप के सामने प्रस्तुत कर दिया हैं।”

“हूँ!” सदस्यों के मुंह से निकला- “तो यह बात है!”

“अब मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया मेरा त्याग पत्र स्वीकार लें।” मैंने कहा।

मेरी आप बीती सुन कर कमिटी के सदस्यों ने कुछ सोचना शुरू कर दिया। तभी मौसीजी गीता से बोलीं- “गीता! अब तुम बोलो।”

“इनको बहुत ढूँढ़वाया पर कहीं पता नहीं चला। माता पिता ने आगे पढ़ाई जारी रखने को कहा। मैं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण थी। बी. एड. में दाखिला मिल गया और प्रशिक्षण करने के पश्चात संयोग से एक विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी मिल गई।

“इसी बीच मैंने आयोग में आवेदन भर दिया और साक्षात्कार के बाद मुझे प्रिंसिपल हेतु चुन लिया गया जहां से मुझे आप के कालेज में भेज दिया गया। मेरे कहने पर जब कालेज की परिचारिका मोहनी देवी से ब्यास के बारे में पूछ-ताछ की तो उसने बताया कि ब्यास अपनी पत्नी के मर जाने से बहुत दुखी हैं।

“अतः मेरा भी इस्तीफा देने का यही कारण है कि हम पास और साथ रह कर अपने बीते दिनों को कुरेद-कुरेद कर नहीं जी सकते।”

अब तक कमिटी के सभी सदस्यों को असलियत का पता चल गया था और दोनों के इस्तीफा देने का कारण भी। अब सभी सदस्य एक-दूसरे का मुख देख रहे थे।

तभी कलावती देवी अपने नौकर से बोलीं- “ब्यास के दोनों छोटे बच्चों हलौं यहां लेकर आओ।”

नौकर ने अपनी मालकिन की आज्ञा का पालन किया और ब्यास के बच्चों को लेकर सभा में पहुंच गया।

बच्चों को पास बुलाकर मौसी ने अपनी गोद में भींच लिया और गीता की ओर देख कर समझाते हुए बोली- “गीता, नारी पूरी तब होती है जब उसके मन में पत्नीत्व, मातृत्व, गृहिणीत्व और शील तथा मर्यादा हो। नारी यदि इन सब विभूतियों का त्याग कर केवल नारी ही बनी रहे तो वह नारी समाज में थूकने लायक होती है।”

गीता ने अभी भी अपनी शांति बनाए रखी।

मैनेजर बोले- “मैं तो प्राचार्या से यही कहूंगा कि यह एक ऐसा संयोग है, जिसमें एक अनजान चौराहे पर खड़े होने के बाद भी तुम दोनों का मिलन संभव हो गया है।

“जीवन में ऐसे भी क्षण आ जाते हैं, जब समझ और सोच की शक्तियां मंद पड़ जाती हैं। जब मन के आगे मस्तिष्क का भी बस नहीं चलता है, तब अपनों, बुजुर्गों का कहना मानना चाहिए। सोच लो, प्रत्येक नारी को एक पुरुष की छाया में ही रहना पड़ता है, अन्यथा समाज उसे जीने नहीं देता। उसका पल-पल उपहास करता है।”

मौसी बोली- “प्रथम प्रेम तो एक ही होता है लेकिन वह तिरस्कृत हो जाए तो मनुष्य आत्महत्या तो नहीं कर लेता लेकिन टूट अवश्य जाता है। प्रेम में स्मृति का सुख, जिससे टीस उठती है, हमारे विचार से तुम्हारे मन में हमारे ब्यास के लिए अभी भी है। शायद इसी के कारण आज भी तुम कुंवारी हो।

“तुम्हें एक पति की जरूरत है और ब्यास के लिए अपने दोनों बच्चों के लिए मां की।” मौसी ने कहते हुए दोनों बच्चों को गीता की ओर भेज दिया।

गीता चुप थी, जैसे किसी अतीत में खोई हो। तभी दोनों बच्चे उसके पास जाकर खड़े हो गए। मौसी गीता से बोली-“गीता, तुम्हें और क्या चाहिए? जो किसी नारी के जीवन में चाहिए, वह तुम्हें मिलने जा रहा है। बस, एक बार मुस्कुरा कर दोनों बच्चों को अपना लो।”

लेकिन गीता अब भी चुप थी। मैनेजर ने गीता की ओर देख कर जोर देकर कहा-“मेरी धर्मपत्नी ठीक कर रही है। थोड़ा मुस्कुरा दो। अरे, तुम्हारी मुस्कुराहट पर कुछ भी खर्च नहीं होगा।”

मौसी ने कहा- “इस मुस्कुराहट से तुम दोनों के भविष्य में एक प्रकाश आ जाएगा। जीवन दोनों का संवर जाएगा।”

सेक्रेटरी महोदय मुझसे बोले-“बड़े बाबू, उठो और गीता को हम सब के सामने गले लगा लो, हम सबका यही फैसला है।”

मैंने धीरे से दोनों हाथ गीता की तरफ फैला दिए और इंटर कालेज की नई प्रिंसिपल हमारे सीने से आ लगीं। दोनों बच्चे भी हम दोनों के साथ थे।

अंत में मौसी अपना फैसला सुनाते हुए बोलीं-“तुम दोनों के त्याग पत्र स्वीकार कर लिए जाते हैं।”

“लेकिन.....लेकिन ये अस्वीकार भी हो सकते हैं यदि तुम दोनों कोर्ट जाकर अपने विवाह का पंजीकरण करा लो।”

दोनों प्रसन्नता के साथ सभी सदस्यों के चरण छूने लगे।

— व्यास किशोर

YYYYYYYY

**भाषा हमारे सोचने के तरीके
को स्वरूप प्रदान करती है
और निर्धारित करती है कि हम
क्या-क्या सोच सकते हैं।**

— बेञ्जामिन होफ

सुकन्या समृद्धि योजना

पीएम नरेंद्र मोदी ने सुकन्या समृद्धि योजना की शुरुआत 4 दिसंबर, 2014 को थी। यह एक लॉन्ग-टर्म डेट स्कीम है, जिसमें कोई भी शख्स बेटी के जन्म से लेकर उसके 10 साल की हो जाने तक कभी भी अकाउंट खुलवा सकता है। यह अकाउंट बैंक या पोस्ट ऑफिस में खुलवाया जा सकता है। यह अकाउंट बच्ची के 21 साल की होने तक जारी रहेगा।

बेटी की पढ़ाई व शादी की टेंशन होगी दूर

खाता खुलवाने के समय 1000 रुपए की जरूरत होगी। जो कैश, चेक, और ड्राफ्ट में जमा हो सकते हैं। यह योजना बालिका के जन्म से लेकर शादी करने तक परिजनों को आर्थिक मजबूती प्रदान करती है। यह योजना घटते लिंगानुपात के बीच कन्या जन्म दर को प्रोत्साहन देने में मदद करेगी। मां-पिता की बेटी की पढ़ाई व शादी के लिए पैसे की टेंशन दूर करने में मदद करेगी।

इन चीजों की होगी जरूरत

खाते के लिए लड़की का जन्म प्रमाणपत्र, अभिभावक का पहचान प्रमाण पत्र और निवास प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होगी। यह खाता पोस्ट ऑफिस और केंद्र सरकार द्वारा अधिकृत किसी भी बैंक (भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक, आंध्रा बैंक, यूसीओ बैंक और इलाहाबाद बैंक) में खोला जा सकेगा।

देनी होगी इतनी रकम

माता-पिता दोनों, या फिर दोनों में से एक अथवा दोनों के न होने की स्थिति में कानूनी अभिभावक पैसा जमा कर सकते हैं। कम से कम 1 हजार रुपए से अकाउंट खुलवाया जा सकता है। साल में 1 हजार रुपए और अधिकतम डेढ़ लाख रुपए जमा कराए जा सकते हैं। किसी साल मिनिमम जमा नहीं करा पाते हैं तो अगले साल पिछले साल की ड्यू रकम के अलावा 50 रुपए पेनल्टी देनी होगी। खाता खोलने से 14 साल तक इस स्कीम में पैसा जमा कराना होगा। 14 साल पूरे होने से पहले ही बच्ची 21 साल की हो जाती है तो भी खाता बच्ची के 21 साल की होने पर ही बंद हो जाएगा। अकाउंट में 1 हजार से डेढ़ लाख के बीच कितनी भी रकम साल में जमा करा सकते हैं।

इतने पैसे मिलेंगे वापस

जब बच्ची 21 साल की हो जाएगी तो यह योजना मैच्योर होगी। उस वक्त उसे पैसा मिलेगा। हां, बच्ची की हायर एजुकेशन और शादी के लिए समय से पहले भी पैसा निकाला जा सकता है। बच्ची की उम्र 18 साल होने के बाद



फीसदी पैसा निकाल सकते हैं। मान लीजिए 2015 में कोई शख्स 1000 रुपए महीने से अकाउंट खोलता है यानी हर साल 12 हजार रुपए अकाउंट में डालता है। उसे 14 साल तक यानी 2028 तक हर साल 12 हजार रुपए डालने होंगे। अगर यह माना जाए कि उसे हर साल 9.1 फीसदी की दर से ब्याज मिलता रहेगा तो जब बच्ची 21 साल की होगी तो उसे मिलेंगे 6,07,128 रुपए। यहां आपको बता दें कि इस शख्स के द्वारा 14 साल में जमा किया गया कुल मूलधन 1,68,000 रुपए ही है। इसके अलावा बाकी की रकम ब्याज की है। जाहिर है, इससे ज्यादा रकम हर साल जमा करने वाले लोगों को इसी अनुपात में मैच्योरिटी का अमाउंट बढ़कर मिलेगा।

टैक्स में मिलेगी छूट

इस योजना में किए गए इन्वेस्टमेंट को 80 सी में शामिल किया जाएगा। ऐसा फाइनेंशियल इयर 2015-16 से होगा। 80 सी में छूट की अधिकतम सीमा डेढ़ लाख है। खास बात यह है कि मैच्योरिटी पर मिलने वाली रकम पर भी कोई इनकम टैक्स नहीं देना होगा। फाइनेंशियल इयर 2014-15 के लिए इस पर 9.1 फीसदी की सालाना दर से ब्याज मिलेगा। ब्याज की दर हर



साल के लिए अलग से घोषित की जाएगी।

इतनी बच्चियों का खुल सकता है खाता

एक बच्ची के नाम पर एक ही खाता खुल सकेगा। और एक परिवार की अधिकतम दो बच्चियों के नाम पर ये खाता खुल सकेगा। लेकिन, यदि एक बार में तीन बच्चियां जन्म लें, या फिर एक बच्ची पहले से हो और फिर जुड़वां बच्चियां हों, इस सूरत में तीनों बच्चियों के नाम एक-एक खाता खुलवाया जा सकेगा। इस योजना को खाता खुलने के 21 साल बाद ही बंद किया जा सकेगा। अगर 21 साल होने से पहले बच्ची की शादी हो जाए तो खाते को पहले ही बंद करवाना पड़ेगा। शादी न होने की सूरत में खाते को 21 साल के बाद भी जारी रखा जा सकेगा।

दूसरी जगह भी शिफ्ट हो सकता है खाता

कन्या की मृत्यु हो जाने की स्थिति में, डेथ सर्टिफिकेट जमा करने के बाद ही ये खाता बंद किया जाएगा। इस सूरत में खाते का बैलेंस के साथ ब्याज का भुगतान परिजनो को किया जाएगा। कन्या एक जगह से दूसरी जगह शिफ्ट होने की सूरत में खाते को दूसरी जगह स्थानांतरित करना भी संभव होगा। जब कन्या की उम्र 18 साल की हो जाएगी। तो जमा राशि का 50 फीसदी राशि शादी या शिक्षा के लिए निकाला जा सकेगा।

— वीरेन्द्र यादव

एक पत्र

प्रिय भाई,

जैसे ही यह पत्र तुम्हें मिलेगा, मैं जा चुका होगा-दूर एक मंजिल की तरफ। मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आज बहुत खुश हूँ। हमेशा से ज्यादा। मैं यात्रा के लिए तैयार हूँ, अनेक-अनेक मधुर स्मृतियों के होते और अपने जीवन की सब खुशियों के होते भी, एक बात जो मेरे मन में चुभ रही थी कि मेरे भाई, मेरे अपने भाई ने मुझे गलत समझा और मुझ पर बहुत ही गंभीर आरोप लगाए- कमजोरी का। आज मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। पहले से कहीं अधिक। आज मैं महसूस करता हूँ कि वह बात कुछ भी नहीं थी, एक गलतफहमी थी। मेरे खुले व्यवहार को मेरा बातूनीपन समझा गया और मेरी आत्मस्वीकृति को मेरी कमजोरी। मैं कमजोर नहीं हूँ। अपनों में से किसी से भी कमजोर नहीं।

भाई! मैं साफ दिल से विदा होऊँगा। क्या तुम भी साफ होगे? यह तुम्हारी बड़ी दयालुता होगी, लेकिन ख्याल रखना कि तुम्हें जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठाना चाहिए। गंभीरता और शांति से तुम्हें काम को आगे बढ़ाना है, जल्दबाजी में मौका पा लेने का प्रयत्न न करना। जनता के प्रति तुम्हारा कुछ कर्तव्य है, उसे निभाते हुए काम को निरंतर सावधानी से करते रहना।

सलाह के तौर पर मैं कहना चाहूँगा की शास्त्री मुझे पहले से ज्यादा अच्छे लग रहे हैं। मैं उन्हें मैदान में लाने की कोशिश करूँगा, बशर्ते की वे स्वेच्छा से, और साफ़ साफ़ बात यह है की निश्चित रूप से, एक अँधेरे भविष्य के प्रति समर्पित होने को तैयार हों। उन्हें दूसरे लोगों के साथ मिलने दो और उनके हाव-भाव का अध्ययन होने दो। यदि वे ठीक भावना से अपना काम करेंगे तो उपयोगी और बहुत मूल्यवान सिद्ध होंगे। लेकिन जल्दी न करना। तुम स्वयं अच्छे निर्णायक होगे। जैसी सुविधा हो, वैसी व्यवस्था करना। आओ भाई, अब हम बहुत खुश हो लें।

खुशी के वातावरण में मैं कह सकता हूँ कि जिस प्रश्न पर हमारी बहस है, उसमें अपना पक्ष लिए बिना नहीं रह सकता। मैं पूरे जोर से कहता हूँ कि मैं आशाओं और आकांक्षाओं से भरपूर हूँ और जीवन की आनंदमयी रंगीनियों ओत-प्रोत हूँ, पर आवश्यकता के वक्त सब कुछ कुर्बान कर सकता हूँ और यही वास्तविक बलिदान है। ये चीजें कभी मनुष्य के रास्ते में रुकावट नहीं बन सकतीं, बशर्ते कि वह मनुष्य हो। निकट भविष्य में ही तुम्हें प्रत्यक्ष प्रमाण मिल जाएगा।

किसी व्यक्ति के चरित्र के बारे में बातचीत करते हुए एक बात सोचनी चाहिए कि क्या प्यार कभी किसी मनुष्य के लिए सहायक सिद्ध हुआ है? मैं आज इस प्रश्न का उत्तर देता हूँ – हाँ, यह मेजिनी था। तुमने अवश्य ही पढ़ा होगा की अपनी पहली विद्रोही असफलता, मन को कुचल डालने वाली हार, मरे हुए साथियों की याद वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह पागल हो जाता या आत्महत्या कर लेता, लेकिन अपनी प्रेमिका के एक ही पत्र से वह, यही नहीं कि किसी एक से मजबूत हो गया, बल्कि सबसे अधिक मजबूत हो गया।

जहां तक प्यार के नैतिक स्तर का संबंध है, मैं यह कह सकता हूँ कि यह अपने में कुछ नहीं है, सिवाए एक आवेग के, लेकिन यह पाशविक वृत्ति नहीं, एक मानवीय अत्यंत मधुर भावना है। प्यार अपने आप में कभी भी पाशविक वृत्ति नहीं है। प्यार तो हमेशा मनुष्य के चरित्र को ऊपर उठाता है। सच्चा प्यार कभी भी गढ़ा नहीं जा सकता। वह अपने ही मार्ग से आता है, लेकिन कोई नहीं कह सकता कि कब?

हाँ, मैं यह कह सकता हूँ कि एक युवक और एक युवती आपस में प्यार कर सकते हैं और वे अपने प्यार के सहारे अपने आवेगों से ऊपर उठ सकते हैं, अपनी पवित्रता बनाये रख सकते हैं। मैं यहाँ एक बात साफ़ कर देना चाहता हूँ की जब मैंने कहा था की प्यार इंसानी कमजोरी है, तो यह एक साधारण आदमी के लिए नहीं कहा था, जिस स्तर पर कि आम आदमी होते हैं। वह एक अत्यंत आदर्श स्थिति है, जहाँ मनुष्य प्यार-घृणा आदि के आवेगों पर काबू पा लेगा, जब मनुष्य अपने कार्यों का आधार आत्मा के निर्देश को बना लेगा, लेकिन आधुनिक समय में यह कोई बुराई नहीं है, बल्कि मनुष्य के लिए अच्छा और लाभदायक है। मैंने एक आदमी के एक आदमी से प्यार की निंदा की है, पर वह भी एक आदर्श स्तर पर। इसके होते हुए भी मनुष्य में प्यार की गहरी भावना होनी चाहिए, जिसे की वह एक ही आदमी में सिमित न कर दे बल्कि विश्वमय रखे।

मैं सोचता हूँ मैंने अपनी स्थिति अब स्पष्ट कर दी है। एक बात मैं तुम्हे बताना चाहता हूँ की क्रांतिकारी विचारों के होते



**व्यक्तियों को कुचल कर, वे
विचारों को नहीं मार सकते।**
भगत सिंह

हुए हम नैतिकता के सम्बन्ध में आर्यसमाजी ढंग की कट्टर धारणा नहीं अपना सकते। हम बढ़-चढ़ कर बात कर सकते हैं और इसे आसानी से छिपा सकते हैं, पर असल जिंदगी में हम झट थर-थर कांपना शुरू कर देते हैं।

मैं तुम्हे कहूँगा की यह छोड़ दो। क्या मैं अपने मन में बिना किसी गलत अंदाज के गहरी नम्रता के साथ निवेदन कर सकता हूँ की तुममे जो अति आदर्शवाद है, उसे जरा कम कर दो। और उनकी तरह से तीखे न रहो, जो पीछे रहेंगे और मेरे जैसी बिमारी का शिकार होंगे। उनकी भर्त्सना कर उनके दुखों-तकलीफों को न बढ़ाना। उन्हें तुम्हारी सहानुभूति की आवश्यकता है।

क्या मैं यह आशा कर सकता हूँ कि किसी खास व्यक्ति से द्वेष रखे बिना तुम उनके साथ हमदर्दी करोगे, जिन्हें इसकी सबसे अधिक जरूरत है? लेकिन तुम तब तक इन बातों को नहीं समझ सकते जब तक तुम स्वयं उस चीज का शिकार न बनो। मैं यह सब क्यों लिख रहा हूँ? मैं बिल्कुल स्पष्ट होना चाहता था। मैंने अपना दिल साफ़ कर दिया है।

तुम्हारी हर सफलता और प्रसन्न जीवन की कामना सहित,
तुम्हारा भाई

— नव ज्योति 'अंकुश'

आधार कार्ड

आधार कार्ड भारत सरकार द्वारा भारत के नागरिकों को जारी किया जाने वाला पहचान पत्र है। इसमें 12 अंकों की एक विशिष्ट संख्या छपी होती है जिसे भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (भा.वि.प.प्रा.) जारी करता है।[1] यह संख्या, भारत में कहीं भी, व्यक्ति की पहचान और पते का प्रमाण होगा। भारतीय डाक द्वारा प्राप्त और यू.आई.डी.ए.आई. की वेबसाइट से डाउनलोड किया गया ई-आधार दोनों ही समान रूप से मान्य हैं। कोई भी व्यक्ति आधार के लिए नामांकन करवा सकता है बशर्ते वह भारत का निवासी हो और यू.आई.डी.ए.आई. द्वारा निर्धारित सत्यापन प्रक्रिया को पूरा करता हो, चाहे उसकी उम्र और लिंग (जेण्डर) कुछ भी हो। प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बार नामांकन करवा सकता है। नामांकन निशुल्क है। आधार कार्ड एक पहचान पत्र मात्र है तथा यह नागरिकता का प्रमाणपत्र नहीं है। UIDAI का अध्यक्ष नंदन निलेकणि को बनाया गया है। UIDAI का लक्ष्य आगामी चार वर्षों में 60 करोड़ लोगों का 'आधार नंबर 331501465813' जारी करने का है। आधार संख्या प्रत्येक व्यक्ति की जीवनभर की पहचान है।

आधार संख्या से आपको बैंकिंग, मोबाइल फोन कनेक्शन और सरकारी व गैर-सरकारी सेवाओं की सुविधाएं प्राप्त करने में सुविधा होगी।

किफायती तरीके व सरलता से ऑनलाइन विधि से सत्यापन योग्य।

सरकारी एवं निजी डाटाबेस में से डुप्लिकेट एवं नकली पहचान को बड़ी संख्या में समाप्त करने में अनूठा एव ठोस प्रयास।



आधार कार्ड अब सभी चीजों के लिए जरूरी होता जा रहा है। पहचान के लिए हर जगह आधार कार्ड मांगा जाता है। आधार कार्ड के महत्व को बढ़ाते हुए भारत सरकारने बड़े फैसले लिए हैं जिसमें आपके पास आधार कार्ड नहीं है तो वह काम होना मुश्किल होगा। इस कार्ड को कोई और इस्तमाल नहीं कर सकता है, जबकि राशनकार्ड समेत कई और दूसरे प्रमाण पत्र के साथ कई तरह कि गड़बड़ियाँ हुई है और होती रहती है।

पासपोर्ट जारी करने के लिए आधार को अनिवार्य कर दिया गया है।

जनधन खाता खोलने के लिये

एलपीजी की सबसीडी पाने के लिये

ट्रेन टिकट में छूट पाने के लिए

परीक्षाओं में बैठने के लिये (जैसे आईआईटी जेईई के लिये)

बच्चों को नर्सरी कक्षा में प्रवेश दिलाने के लिये

डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र (लाइफ सर्टिफिकेट) के लिए आधार जरूरी

बिना आधार कार्ड के नहीं मिलेगा प्रविडेंट फंड

डिजिटल लॉकर के लिए आधार जरूरी

सम्पत्ति के रजिस्ट्रेशन के लिए भी आधार कार्ड जरूरी कर दिया गया है।

छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति भी आधार कार्ड के जरिए ही उनके बैंक में जमा करवाई जाएगी।

सिम कार्ड खरीदने के लिये

आयकर रिटर्न

— इंद्र ज्योति राय

सच्चिदानंद " जिज्ञासु" की दो कवितायें

मन का दीप जलाएँ

चलो मन से मन का दीप जलाएँ
जगमग-जगमग दिवाली मनाएँ
मन से मन का दीप जलाएँ
घृणा-द्वेष को मिल दूर भगाएँ

जगमग दीप जलते घर-घर में
तम फिर भी न छंटते नफरत के
जगमग-जगमग मनती दिवाली
दिखती है गरीबों की ड्योडि सूनी

धूम धड़ाके पटाखे चलते
आकाश ऊपर राकेट फूटते
मन पाए कैसी दिवाली हाय
जिसकी जेब हो पैसे से खाली

अमीरों की दहलीज पर सजते
बहुमंजिलों पर दीपक जा बैठे
वहीं झिलमिलाती रोशनियां हैं
निर्धन भला कैसे दिवाली मनाते

दीप हजारों जगमगाएँगे जग में
अगर भूखे दो रोटी पा जायेंगे
दुआओं से जहां महक उठेगी
नव आलोक से आत्मा भर जाएगी ।

अंधकार को दूर भगाएँ

चलो अंधकार को दूर भगाएँ
प्यार लुटायें सब पर आज
फिर खुशियों के दीप जलाएँ
चलो अंधकार को दूर भगाएँ

करें शुद्ध निज मन मंदिर को
क्रोध- लालच-विष छोड़ें
निःस्वार्थ हो यह जीवन
चलो मोह बंधन तोड़ डालें

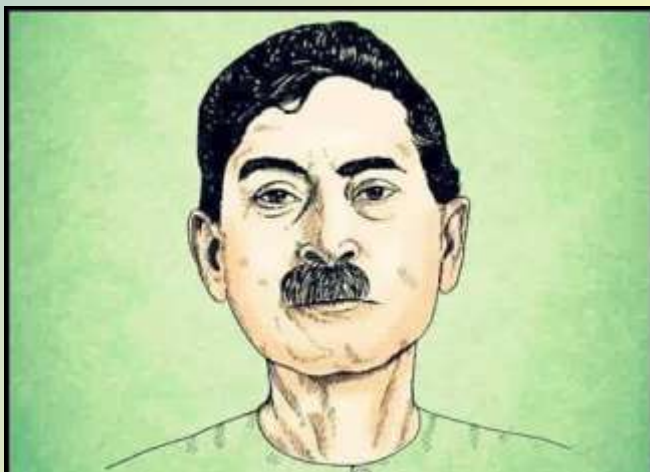
आँखों पर पड़ें हुए परदे को खोले
अज्ञान ,अशिक्षा को दूर भगायें
निर्धनों पर स्नेह लुटाएँ
फिर खुशियों के दीप जलाएँ

जीवन पथ में भटक गये जो
उनको नई राह दिखलाएँ
नई सोच और नई कल्पना से
चलो अंधकार को दूर भगाएँ



चित्र वीथिका

हिन्दी साहित्य की महान विभूतियां



प्रेमचंद



मैथलीशरण गुप्त



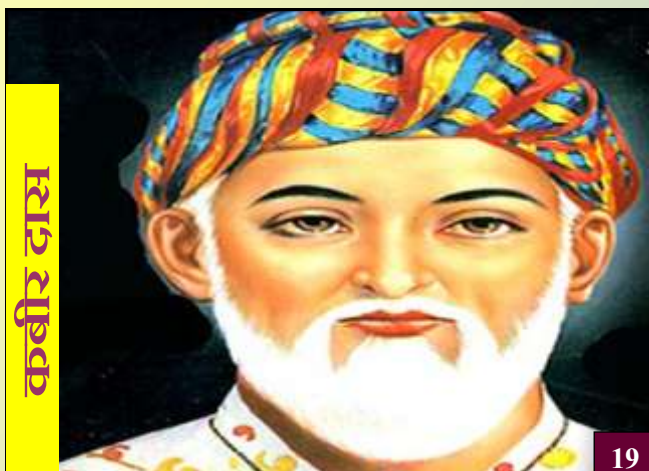
भारतेंदु हरिश्चंद्र



सत्यदेवदुबे "अज्ञेय"



महादेवी वर्मा



कबीर दास

छायाचित्र

मालदा मंडल के अंतर्गत आने वाले हमारे कुछ सांस्कृतिक विरासत ।

बाएं से—मालदा, मुंगेर, मुंगेर के घाट, मस्जिद गौड़ मालदा, विक्रमशिला, सिंधी दलान राजमहल

